डॉ0 जगमोहन माथोडिया (वान चित्रण श्रृंखला)

कृष्ण कुमार
शोधार्थी चित्रकला विभाग संकाय
नन्दलाल बोस कॉलिज आफ फाईन आर्टस एण्ड फैशन डिज़ाइन

स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ

कला एक रचनात्मक घटना है जो लगातार बदलती रहती है, कला की परिभाशा कई भाब्दों मे व्यक्त की गई है। परन्तु कला को पूर्णतः परिभाशित नहीं किया जा सकता। क्योंकि कला व्यापक है, कला के रूप अनेक है। कला मानव की अभिव्यक्ति भी है, कला मानव के भाव भी है कला मनुश्य की नवीन खोज भी है। कला के अनेको अर्थ बतलाये गये है। कला की उपयुक्त परिभाशा खोजना असम्भव है।

कला को परिभाशित कर पाना उतना ही असम्भव है, जितना की समुन्द्र की एक–एक बूंद को नाप पाना। कई सिद्धान्तकारों, कलाकारा, आलोचको, मे कला को अपने भाब्दों मे व्यक्त किया है, परन्तु हम उन्हें सत्य नहीं मान सकते वह परिभाशा उनके भाव सिद्धान्तों के अनुरूप है। कला उनके नजरिये से क्या है। उन्होंने यह द ार्शाया है। हमारा नजरिया क्या है कला को लेकर अर्थात् कला की परिभाशा विभिन्न–विभिन्न इसलिए ही बतलाई गई है। क्योंकि इस संसार मे विभिन्न प्रकार के भाव विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों के साथ हम हमारे जीवन को यापन कर रहे है। यहीं अभिव्यक्तियां यहीं भावनाएं, यही सोच हमे कला को अलग–अलग रूप में परिभाशित करती है। ऐसे ही अनेकों भाव व अभिव्यक्तियों के साघ डॉ0 जगमोहन माथोडिया ने अपनी कला यात्रा को जारी रखा।

यू तो डॉ0 जगमोहन माथोडिया में अपने कला जीवन में अनेको श्रृंखलाओं मे कार्य किया। चाहे वो (सिटी स्केप) हो या पक्षियों को लेकर हो या फिर मनुश्य रूपी रेखांकन की श्रृंखला है। सभी श्रृंखलाओं के चित्रण बहुत ही खूबसूरत व आकर्शक दिखलाई पडते है। परन्तु डॉ0 जगमोहन माथोडिया की वान श्रृंखला का गुण का वर्णन कर पाना असम्भव है।

वान श्रृंखला आपने 1994 में सुख कि और इस श्रृंखला के अर्न्तगत डॉ0 जगमोहन माथोडियां मे कुल मिलाकर 582 कलाकृतियों का निर्माण किया। जिसके अर्न्तगत कुल 5714 वान का चित्रण किया गया। इस श्रृंखला की कई कृतियां अत्यधिक आकर्शित रही। जिसके चलते उन्होंने लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड में उपलब्धि स्वरूप अपना नाम अंकित करवाया। 5714 वान की कृतियों के माध्यम से उन्होंने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों रंगो व रेखांकन् के रूप में प्रद ार्शित किया। वान श्रृंखला के अर्न्तगत के रेखांकन अधिक किया गया। इस श्रृंखला की ज्यादातर कलाकृतियां ब्लोक एण्ड़ वाइट ही बनाई गई है। डॉ0 जगमोहन माथोडिया ने वान चित्रण के द्वारा मानव जीवन के अनेको रूपों को प्रद ार्शित किया है, जैसे किं, हर्श उल्लास, दुख, वियोग, स्नेह, आनन्द, परमानन्द, विरह, क्रोध, ई ार्ा, आदि अनेको रूपों को समाज के समक्ष अपने चित्रों के द्वारा प्रद ार्शित किया। एक कलाकार जब भी अपनी कृति का निर्माण करता है तो उस कृति के बनने के पीछे एक अभिव्यक्ति या कहानी होती है जिसे की कलाकार अपने आयामों के द्वारा पृश्ठभूमि अर्थात् केनवास, कागज, भित्त या अन्य पश्ठभूमि पर अलंकृत करता है। ऐसी ही कुछ अभिव्यक्ति के चलते डॉ0 जगमोहन मोथोडिया ने वान श्रृंखला भाव के चित्रण करना आरम्भ किया। उनके अनुसार जिस प्रकार मानव जाति अपने जीवन मे जो सब क्रिडाये करते है और जीवन यापन करते है उसी प्रकार वान भी अपने जीवन मे क्रिडाओं का समावेश रखते है। सर्वप्रथम वान चित्रण करने के पीछे डॉ0 जगमोहन माथोडिया को वान की बफादारी व इमानदारी मे प्रेरित किया जो। जोकिं वान की अपने मालिक के साघ हमे ाा दिखाई पड़ती है। भ्रारूआती कृतियों मे वान के रेखांकन देखने को मिलते है। एक ही चित्र में अनेको वानों को एक साथ बनाया गया है। मानों वान आपस में पंचायत लगाकर बैठे हों। कुछ रेखाचित्रों में वान कतार मे खड़े, है। मानों किसी चीज के लिए अपनी बारी का इन्तजार कर रहे है। एक कृति मे वान को खाट पर सोते हुए दिखाया गया। कम्बल, रजाई को ओढ़े हुए और चारो

और वानों की खड़ी मुद्रा मे कतार लगी हुई है। जो कि एक मेड का आभास करा रही है। यह कृति मुं ी प्रेमचन्द्र की कहानी पूस की रात की तरह ही दिखलाई पडती है। जिसमें एक किसान अपने खेतों मे ठण्ड की उस रात को गुजारने की म ाक्त में रहता है। इस कृति में खाट के चारों और खड़े वानों के रेखांकन मानों खेत की फसल का आभास करा रहें है। ऐसे अनेकों चित्रण है, जिनमे डॉ0 जगमोहन माथोडिया ने मनुश्य की स्थाति मे वानों को रखा है। ऐसा ही एक चित्रण हमें दिखलाई पड़ता है। जिसमें नाईट पार्टी का द ायि दिखाया गया है। इस चित्र में एक वान जोडा एक दुसरे का हाथ पकड़कर नाच रहे है। व अन्य वान जोडे उन्हें देख रहे है। इस कृति में रंगो की योजना नारंगी, भूरा, काला, हरा आदि रखी गई है। संयोजन प्रणाली का एक अदभूद् रूप हमें इस कृति में देखने को मिलता है। इस कृति में रंगो की योजना के कारण ही यह दृ य रात्री रूपी दिखलाई पड रहा है। जिस प्रकार मानव प्रजाति क्लब व रात की लेट नाईट पार्टा में आनन्द का लाभ उठाते है, उसी प्रकार इस चित्र मे वान को वही आनन्द महसूस करते हुए दिखाया गया है। इस चित्र मे रेखाओं का विभाजन बहुत ही खूबसूरती से किया गया है।

इसी श्रृंखला के एक चित्र के अर्न्तगत 2 खानों को मनुश्य की भांती कुर्ता और धोती में चलते हुए दिखाया गया है। मानों जैसे सुबह की सेर के लिए निकले हो। व आस–पास बहुत से कबूतर दाना चुगते हुए व असंख्य कबूतर पीछे की और उड़ते हुए दिखाए गए है। दोनो वानों को आपस मे एक दूसरे की और देखते हुए बनाया गया है। वही एक वान खड़ी अवस्था में बनाया गया है। यह चित्र एक मनुश्य जीवन की सुबह का दृ य सा दिखलाई पड़ता है। डॉ0 जगमोहन माथोडिया ने अपनी वान चित्रण श्रृंखला में मनुश्य जीवन को ही एक अलग रूप में समाज के समक्ष प्रकट किया है। उनके द्वारा नवीन वान चित्रण में उन्होंने प्रकृति के निरानले स्वभाव को द ाने की कोि ा ा की है। इस कृति मे कोविड महामारी के चल रहे प्रकोप को द ाया गया है। इस कृति मे मनुश्यरूपि आकृतियों को घरों अर्थात इमारतों के छतों पर मुह पर मास्क लगाए दिखाया गया है। मानों जिस प्रकार पक्षियों को पिंजरे मे रखा गया।

वहीं दुसरी ओर वानों को खुले आका ा मे उड़ते हुए दिखाया गया है। मानों वो कह रहें हो कि हम आजाद है। वानों पीठ पर पंख चित्रित किये गए है। इस को देखकर यहीं प्रतित होता है कि मानों वान ये कहं रहे हो कि ये सम्पूर्ण सृस्टि मनुश्य की जागीर नहीं है, जितना हक आजादी का मनुश्य को है उतना ही आजादी का अधिकार सृस्टि पे निहित सभी जीव जन्तुओ को भी है। एसी ही ना जाने कितनी कृतियां है। जो डॉ0 जगमोहन माथोडिया ने समाज को एक आयना दिखाने हेतु निर्मित कि उनके द्वारा बनाये गए अत्यधिक चित्र समाज को एक अलग ही रूप दिखाते है। वान चित्रण की श्रृंखला ने डॉ0 जगमोहन माथोडिया की कला यात्रा के अर्न्तगत एक महत्वपूर्ण दि ाा का कार्य किया। जिसके चलते उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हुई कलाकार कलाकृति के द्वारा संवेगो की अभिव्यक्ति करता है।, कलाकार व्यक्तिगत् संवेगों और अनुभूतियों को कला में चित्रित करता है। जो उसे समाज के साथ जोडे रखता है।